मैया मैं नहिं माखन खायो

शब्दार्थ –
मैया – माता
माखन – मक्खन
भोर – प्रातः
गैयन – गाय
पाछे – पीछे
मधुबन – ब्रजभूमि के एक वन का नाम
मोहि – मुझे
पठायो – भेजना
बंसीवट – बरगद का वह पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण बांसुरी बजाते थे
साँझ – साँयकाल, शाम का समय
बहियन – हाथ, बाँह
छोटो – छोटा
छीको – खूँटी आदि में लटकाया जाने वाला एक उपकरण ,जैसे – हँड़िया या मटका छीका पर ल
टका देना
केहि – कैसे
बिधि – उपाय
पायो – ग्रहण करना
ग्वाल – अहीर, गोपालक
बैर – शत्रु, दुश्मन
बरबस – जबरदस्ती

लपटायो – लगाना
भोरी – भोली
कहे – कहने में
पतियायो – विश्वास करना, सच समझ लेना
जिय – हृदय
भेद – संशय, शंका
उपजि – उत्पन्न होना
पराया – दूसरा
लकुटि – लाठी
कमरिया – छोटा कम्बल
बहुतहिं – बहुत ही
बिहँसि – हँसकर
उर – हृदय
कंठ – गला

व्याख्या – प्रस्तुत पद्यांश में कवि सूरदास जी ने श्री कृष्ण और माता यशोदा के उस वार्तालाप के अंश का वर्णन किया है जहाँ श्री कृष्ण अपनी नटखट बातों से माता यशोदा को मनाने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्होंने मक्खन नहीं खाया है। श्रीकृष्ण अपने आप को सच्चा बताते हुए माता यशोदा से कहते हैं कि हे माता !
मैंने माखन नहीं खाया है। सुबह होते ही आप मुझे मधुबन में गौओं के पीछे भेज देती हो। दिन के चारों पहर तो मैं बरगद के पेड़ के नीचे बाँसुरी बजाता रहता हूँ या वन में भटकता रहता हूँ और शाम होने पर ही मैं घर आता हूँ।

आगे श्री कृष्ण कहते हैं कि मैं तो छोटा बालक हूँ, जिसके छोटेछोटे हाथ अथवा बाँह हैं। मैं किस प्रकार से अपने इन छोटे बाँह और हाथों से छीको अर्थात दही या मक्खन रखने का बर्तन को प्राप्त कर सकता हूँ। ये सभी ग्वालबाल तो मेरे शत्रु हैं जो ये मक्खन मेरे मुख पर जबरदस्ती लगा देते हैं। आगे श्री कृष्ण अपने ग्वाल मित्रों पर ही आरोप लगा देते हैं कि असल में वे ग्वाल मित्र ही उनके मुँह पर जबरदस्ती मक्खन लगा देते हैं, जिसके कारण माता यशोदा को यह भ्रम हो जाता है कि कृष्ण ने मक्खन खाया है।

आगे श्री कृष्ण कहते हैं कि माँ! तू मन की बहुत भोली है, जो इन सबकी बातों में आ जाती है या सबकी बातों पर विश्वास कर लेती है। मुझे लगता है की तेरे दिल में जरूर कोई संदेह है, जो मुझे पराया समझकर मुझ पर संदेह कर रही हो। यह अपनी लाठी और कम्बल ले लो, इन्होंने मुझे बहुत नाच नचाया है। अर्थात कृष्ण माँ यशोदा को चेतावनी दे रहे हैं कि यदि वे उनपर विश्वास नहीं करेंगी तो वे अब गौ चराने भी नहीं जाएंगे।

सूरदास जी कहते हैं इन सभी बातों को सुनकर यशोदा माँ हँस जाती हैं और श्रीकृष्ण को अपने हृदय से लगा लेती हैं।